रत्नमाला

हिंदी पाठ्य पुस्तक

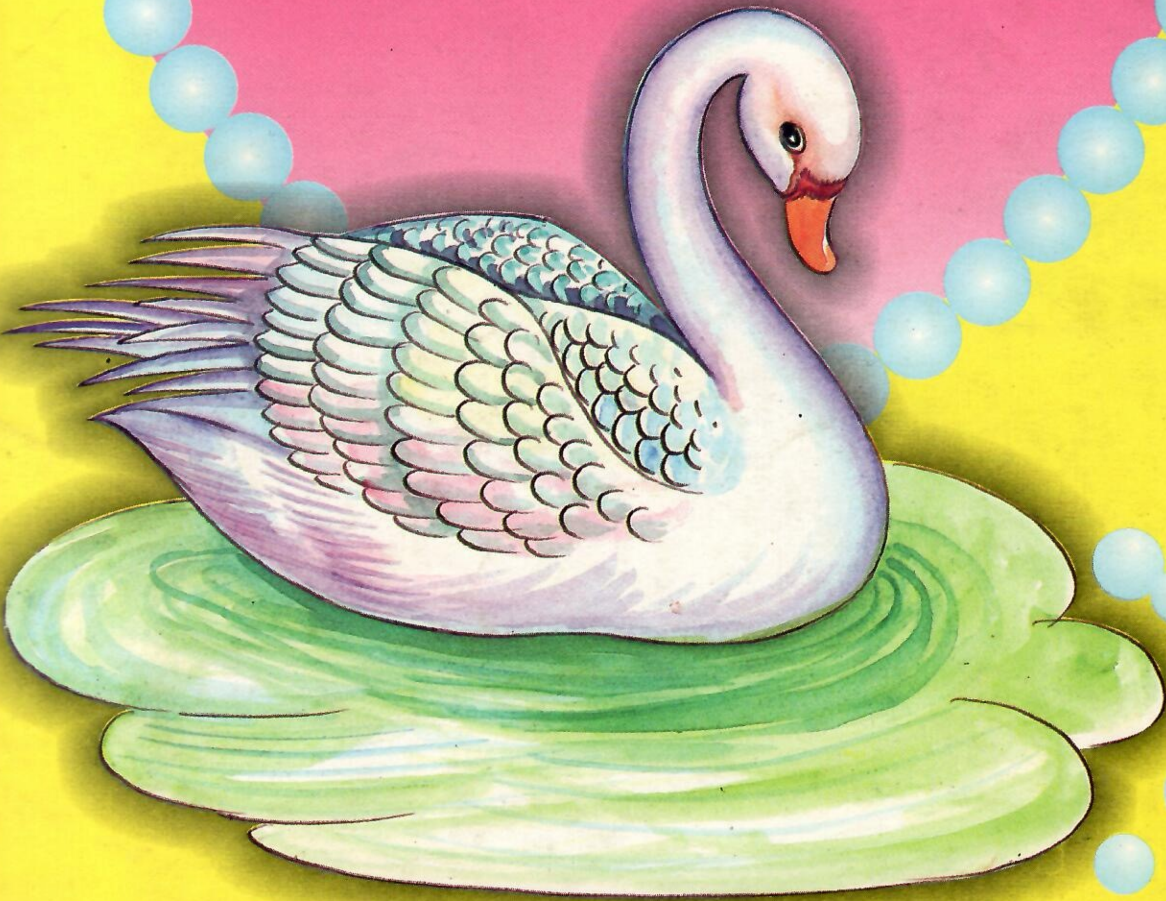

0

वेदप्रकाश

एवरशाइन

रत्नमाला

हिंदी पाठ्य-पुस्तक

भाग - 0

वेदप्रकाश एम.ए.(हिंदी)

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

WZ-348, नांगल राया, नई दिल्ली-46

चित्रों द्वारा वर्णमाला-ज्ञान

अ 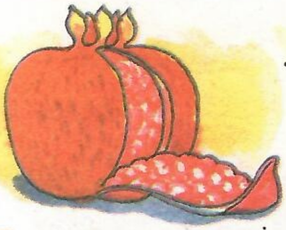 अनार	आ 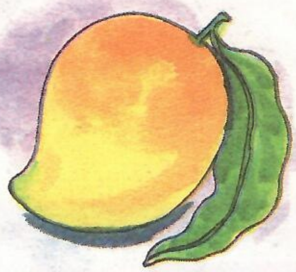 आम	इ इमली
ई ईख	उ उल्लू	ऊ 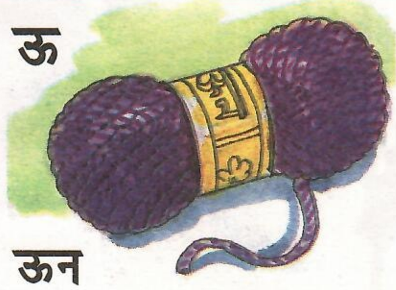 ऊन
ऋ 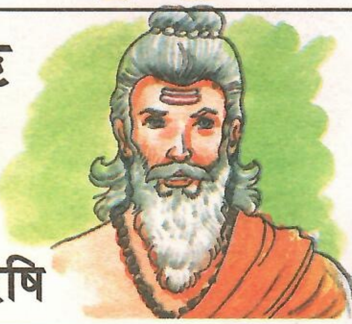 ऋषि	ए 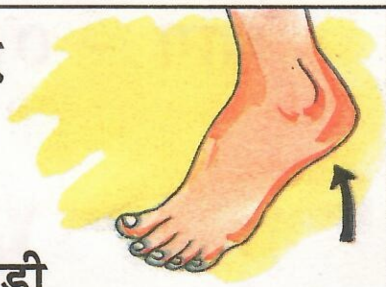 एड़ी	ऐ ऐनक
ओ ओखली	औ औरत	अं 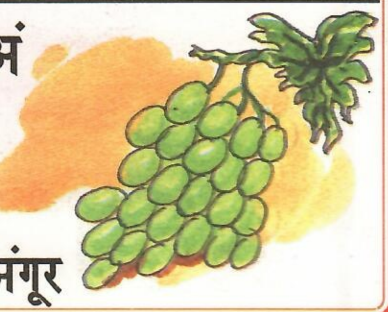 अंगूर

पढ़िए और बोलिए :

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

क
कबूतर
ख
खरगोश
ग
गमला
घ
घड़ी
ङ
ङ
च
चरखा
छ
छतरी
ज
जहाज़
झ
झरना
ञ
ञ
ट
टमाटर
ठ
ठठेरा
ड
डमरू
ढ
ढक्कन
ण
ण
त
तरबूज
थ
थरमस
द
दवात
ध
धनुष
न
नल
प
पतंग
फ
फल
ब
बकरी
भ
भालू

म

मछली

य

यज्ञ

र
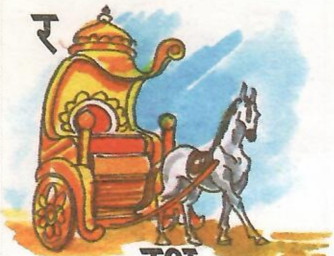
रथ

ल

लट्टू

व

वक

श

शलगम

ष
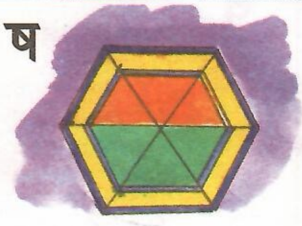
षट्कोण

स

सपेरा

ह

हल

क्ष

क्षत्रिय

त्र

त्रिशूल

ज्ञ

ज्ञानी

पढ़िए और बोलिए :

क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व	श	ष
स	ह	क्ष	त्र	ज्ञ	

वर्णमाला

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
	ष	स	ह	
	क्ष	त्र	ज्ञ	

वर्णों की पहचान

पहचानो और बोलो :

इ	ऐ	ऋ	ऊ	ओ	अं	
अः	उ	ई	आ	ए	अ	औ

स	ट	ह	ख	ण
ग	ध	ल	क	प
ङ	झ	च	न	ब
य	व	श	त	ठ
थ	घ	र	फ	द
ड	ज	भ	ष	छ
	त्र	क्ष	ज्ञ	
	ञ	म	ढ	

अध्यापन संकेत : अध्यापक सभी अक्षर बुलवाने के पश्चात् बच्चों से अलग--अलग ढंग से एक-एक अक्षर पूछें ।

दो प्रकार से लिखे जाने वाले अक्षर

अ = अ	ख = रव	झ = झ
श = श	ल = ल	क्ष = क्ष

नीचे बिंदी वाले अक्षर

ड़	ढ़

नीचे बिंदु वाले व्यंजन :

क़	ख़	ग़	ज़	फ़

मात्राएँ

अ	आ ा	इ ि	ई ी	उ ु	ऊ ू	ऋ ृ
ए े	ऐ ै	ओ ो	औ ौ	अं ं	अः ः	

याद रखें : हिंदी भाषा में केवल ड़ और ढ़ का ही प्रयोग अधिकतर होता है । क़ ख़ ग़ ज़ फ़ अक्षर उर्दू भाषा के ही उच्चारण में आते हैं ।

अभ्यास

नीचे लिखे चित्र पहचानिए और वस्तु का पहला वर्ण खाली स्थान पर लिखिए –

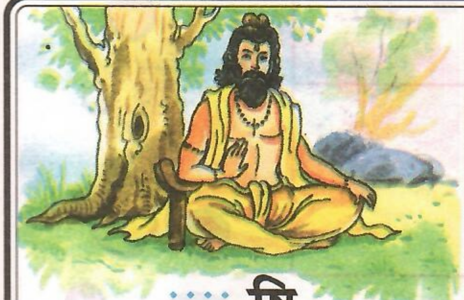 ....षि	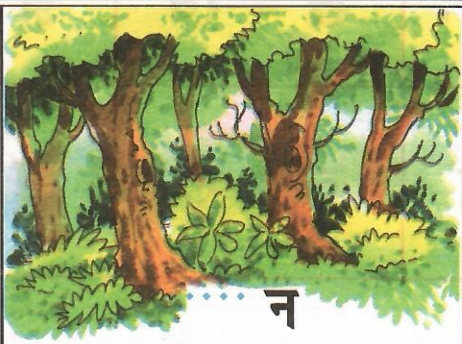 ....न	....रबूज
....तरी	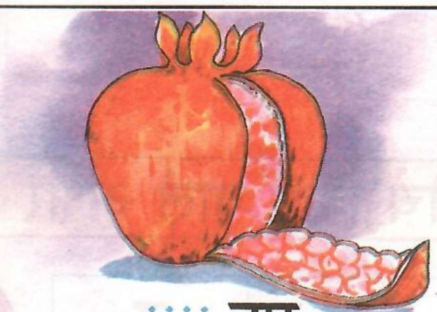 ....नार	....मला
....मली	....शूल	....रत
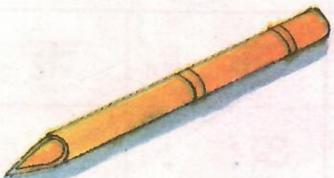 ....लम	....नक	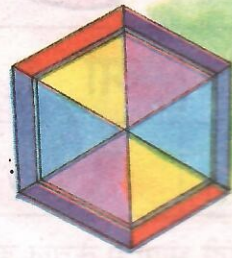 ....ट्कोण

शब्द–रचना

देखिए और पढ़िए :

दो अक्षरों के शब्द

न + ल = नल

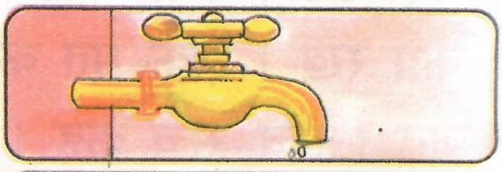

ज + ग = जग

फ + ल = फल

घ + र = घर

ब + स = बस

पढ़िए और समझिए :

तन	मन	दस	बस	रस	चख
नल	बल	छल	जल	हल	रख
घर	पर	डर	नथ	पथ	छत
ठग	मग	जग	नग	झट	खत
कप	लप	थप	ठप	तप	जप

अध्यापन संकेत : कक्षा में प्रत्येक बच्चे से इसी प्रकार दो अलग–अलग वर्ण लिखकर पढ़वाइए और दो अक्षरों के योग से बने शब्दों को पढ़ना सिखाइए ।

पाठ – एक

यश उठ । फल चख । डर मत । घर चल । टब भर । जग मत रख । कप रख । शक मत कर । बस पर चल । रथ पर मत चढ़ । पथ पर बढ़ । सच–सच कह ।

अभ्यास

1. **शब्द जोड़कर लिखिए :**

ख + त = खत   न + ग = ...   भ + र = ...

म + न = ...   फ + ल = ...   ध + न = ...

2. **नीचे लिखे वर्णों से नये शब्द बनाकर खाली जगह में लिखिए :**

क ब ल स र म द त

कल   ....

....

अध्यापन संकेत : यह पाठ बच्चों को सीखे हुए वर्णों और शब्दों के पढ़ने तथा अभ्यास कार्य करने के लिए है ।

बिना मात्रा के शब्द

देखिए और पढ़िए :

तीन अक्षरों के शब्द

ब + त + ख = बतख

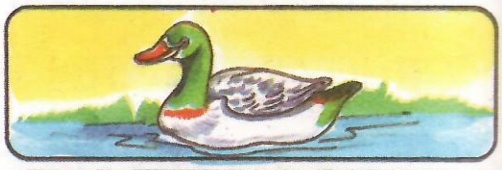

म + ट + र = मटर

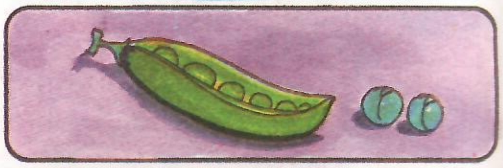

भ + ग + त = भगत

स + ड़ + क = सड़क

न + म + क = नमक

पढ़िए और समझिए :

नगर	डगर	अगर	मगर	खबर
हरण	मरण	शरण	जगह	शहर
जलन	तपन	गगन	मगन	मदन
पलक	झलक	कमर	ठहर	लगन
पहर	सड़क	ज़हर	चटक	नहर

अध्यापन संकेत : कक्षा में प्रत्येक बच्चे से इसी प्रकार से अलग-अलग वर्ण लिखकर पढ़वाइए और तीन अक्षरों के योग से बने शब्दों को पढ़ना सिखाइए ।

पाठ – दो

अजय नगर चल । जलन मत कर । सड़क पर मत टहल । ठहर–ठहर कर चल । पलक मत झपक । मदन खबर कह । नहर पर चल । कलम इधर रख । गलत मत कर । बतख मत पकड़ । कलश उधर रख । भगत भजन कर । इधर–उधर मत मटक । भरत नमन कर । चमन घर तक चल ।

अभ्यास

1. जोड़कर लिखिए :

ख + त = खत   न + ग = ...   भ + र = ...

म + न = ...   फ + ल = ...   ध + न = ...

2. खाली जगह में सही शब्द भरिए व वाक्य पूरे करिए ।

नगर, मटर, भगत

.... गरम कर ।

अमर .... चल ।

.... भजन कर ।

साधारण शब्द

देखिए और पढ़िए :

मात्रा रहित चार अक्षरों के शब्द

अ + ज + ग + र = अजगर

अ + द + र + क = अदरक

ब + र + ग + द = बरगद

थ + र + म + स = थरमस

त + र + क + श = तरकश

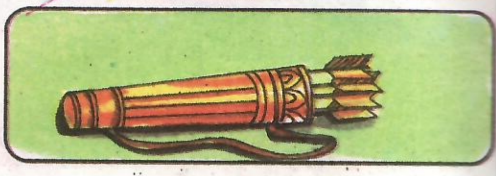

पढ़िए और बोलिए :

दशरथ	अजगर	कसरत	सरकस
अकबर	अहमद	अनवर	तरकश
अचकन	बरतन	गरदन	कतरन
टमटम	शलगम	शबनम	उपवन
मलमल	झटपट	खटपट	हरदम

अध्यापन संकेत : पाठों के अंतर्गत बच्चों को सभी शब्दों को पढ़वाएँ और उनसे ऊँची आवाज़ में सामूहिक एवं व्यक्तिगत ढंग से बुलवाएँ ।

पाठ – तीन

दशरथ पनघट चल । अब बरतन भर । अकबर उधर चल । अचकन पहन । कसरत कर । उपवन चल । गरदन मत पकड़ । हरदम खटपट मत कर । शबनम शलगम चख । बरगद पर मत चढ़ । सरकस चल । गड़बड़ मत कर । नटखट मत बन । टमटम पर थरमस रख ।

अभ्यास

1. पहला सही अक्षर लिखकर शब्द पूरे करिए ।

......नघट, ...सरत, ...रकस, ...दरक

2. चित्र पहचानकर खाली जगह भरिए ।

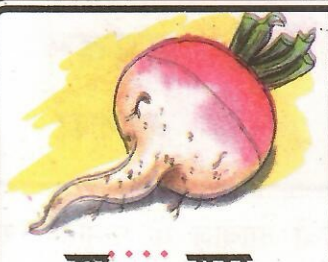	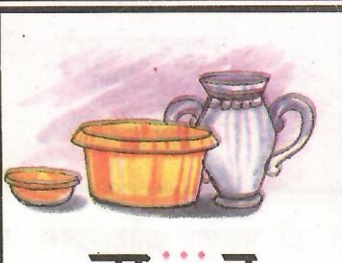		
श....गम	बर....न	थरम....	ब....ग

मात्रा लगे शब्द

आ की मात्रा (ा) का ज्ञान

देखिए और पढ़िए :

क + आ = क + ा = का	म + आ = म + ा = मा	ल + आ = ल + ा = ला

ह + ा = हा, हाथ

म + ा = मा, माला

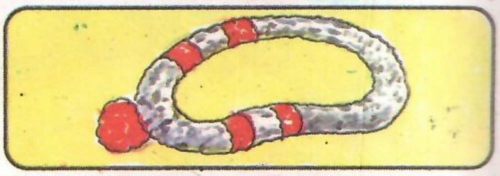

छ + ा = छा, छाता

ब + ा = बा, बाजा

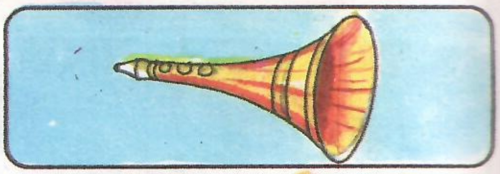

ग + ा = गा, गाजर

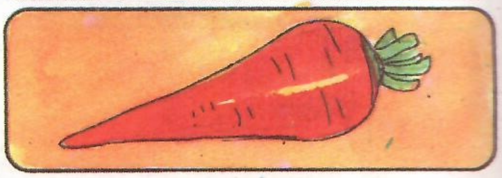

पढ़िए और बोलिए :

राम	नाम	शाम	काम	धाम
हाथ	साथ	बाट	खाट	चाट
काका	दादा	चाचा	मामा	बाबा
राजा	बाजा	माला	ताला	नाना

पाठ – चार

एक लड़का था । उसका नाम भारत था । वह समय पर उठता था । उठकर कसरत करता । भगवान का भजन करता । सबका कहना मानता । सबका आदर करता । समय पर पाठशाला जाता । वह अपना सारा काम करता । पाठ पढ़ता व याद करता । वह सबका लाड़ला था ।

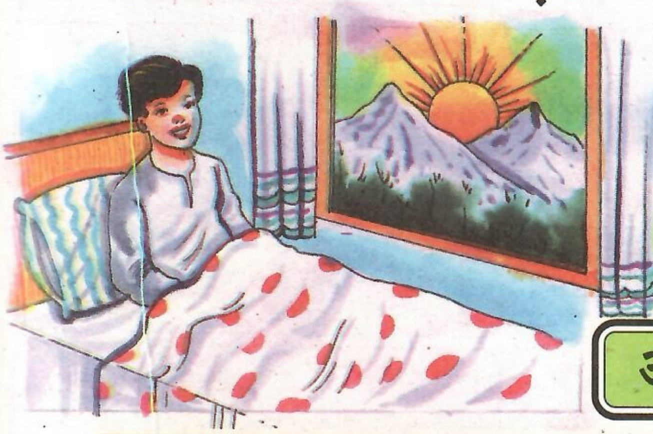

अभ्यास

1. नीचे दिए गए शब्दों से खाली स्थान भरिए।

छाता, कान, बादल,

(क) राम .... लाया ।

(ख) .... मत पकड़ ।

(ग) .... बरसा ।

2. आ (ा) की मात्रा लगाकर शब्द बनाइए ।

जल	जाल	जला	जाला
तल	....	....	....
बज	....	....	....

अध्यापन संकेत : बच्चों के शुद्ध उच्चारण पर विशेष बल दें । अ और आ में समानता तथा अंतर पर ध्यान दिलाएँ । बताएँ कि 'आ' (ा) का अंतिम हिस्सा ही आ की मात्रा का कार्य करता है ।

इ की मात्रा, (इ = ि) का ज्ञान

देखिए और पढ़िए :

क + इ = क + ि = कि	प + इ = प + ि = पि	स + इ = स + ि = सि

ग + ि = गि, गिलास

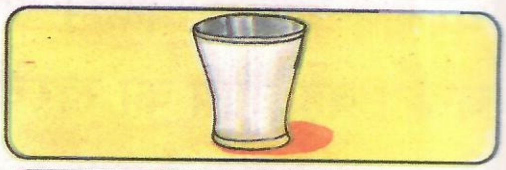

क + ि = कि, किताब

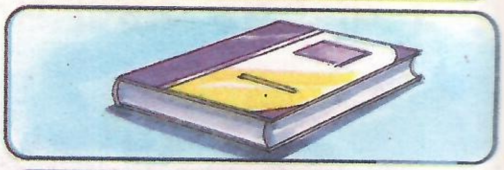

स + ि = सि, सितार

ह + ि = हि, हिरन

च + ि = चि, चिड़िया

पढ़िए और बोलिए :

पिन	गिन	टिन	दिन
मिल	हिल	तिल	बिल
गिरि	निधि	विधि	तिथि
विजय	हिरण	तिलक	किरण
किताब	किसान	निशान	मिलान

पाठ - पाँच

एक बनिया था । उसका नाम विजय था । वह धन का लालच करता । नित गड्ढा करता । धन गाड़ कर रखता । दिन-रात विनय करता । भगवान बढ़िया मकान बना । जग का मालिक बना । अधिक धनवान बना । वह आय का खरचा न करता । सदा झिकझिक करता । उसका एक मित्र था । वह कहता धन का दान कर । झिझक मत ।

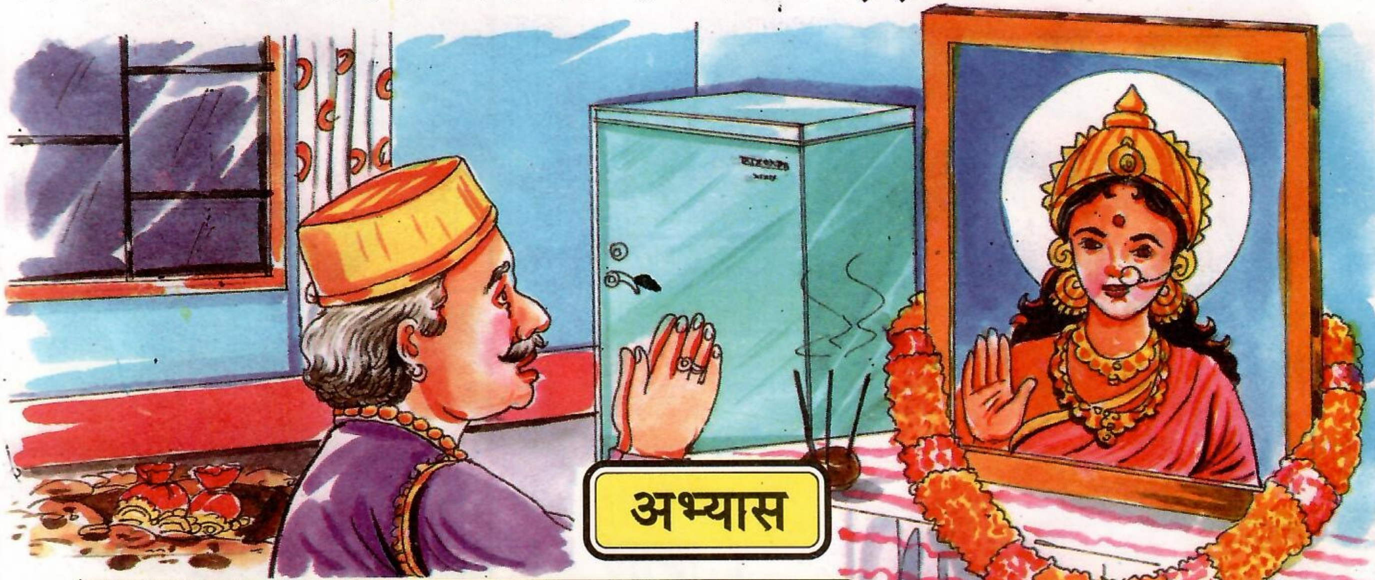

अभ्यास

1. खाली जगह पर सही शब्द भरिए ।

(क) .... उड़ गई । (चिड़िया, गाय)

(ख) सरिता .... बजा । (गिटार, पिटारा)

(ग) कपिल .... पढ़ । (हिसाब, किताब)

2. नीचे लिखे शब्दों को सही कीजिए ।

किटिया.......... लासगि.......... साकिन..........

अध्यापन संकेत : बच्चों को समझाएँ कि 'इ' की मात्रा की आवाज़ व्यंजन के बाद सुनाई देती है । परंतु इसकी मात्रा 'ि' व्यंजन से पूर्व लगाई जाती है ।

ई की मात्रा, (ई = ी) का ज्ञान

ग + ई = ग + ी = गी	त + ई = त + ी = ती	ब + ई = ब + ी = बी

च + ी = ची, चील

त + ी = ती, तीर

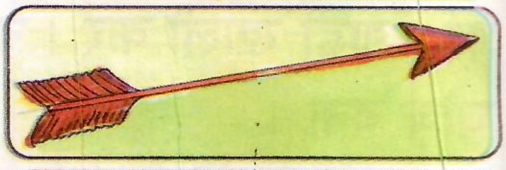

ड़ + ी = ड़ी, घड़ी

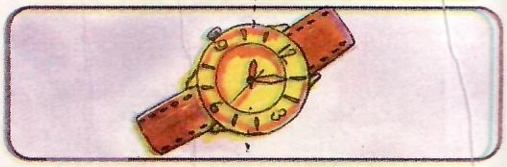

ल + ी = ली, मछली

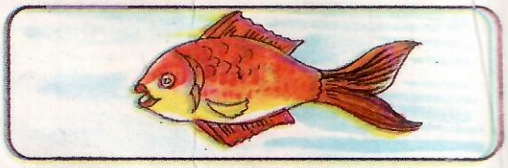

थ + ी = थी, हाथी

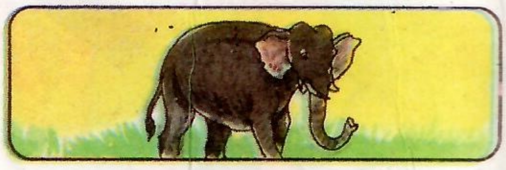

पढ़िए और बोलिए :

मीरा	जीरा	खीरा	हीरा
गीता	सीता	हाथी	साथी
शीशा	जीभ	चील	झील
पपीता	पसीना	महीना	नगीना
ज़मीन	मशीन	दीवार	फ़कीर

अध्यापन संकेत : बच्चों को बताएँ कि 'ई' की मात्रा व्यंजन के बाद ही लगती है और इसके उच्चारण में ऊँचे स्वर में बोलना पड़ता है ।

पाठ – छः

गरमी का महीना आया । गीता आ । पीली वाली साड़ी पहन । बाज़ार जाकर मिठाई भी खरीद ला । जल्दी कर । टिकट ला । गाड़ी आ गई । छत पर नहीं चढ़ । सीट पर सामान रख । रबड़ी वाला आया । दिल्ली आ गई । गाड़ी खाली कर । नानी का घर आ गया । ताली बजा । नानी मीठी चीज़ बना ।

अभ्यास

1. रिक्त स्थान पर उचित शब्द भरिए ।

(क) ………………………… जंगल में रहता है । (चीता/कुत्ता)

(ख) ………………………… मीठा होता है । (करेला/पपीता)

(ग) ………………………… स्कूल जाती है । (बकरी/लड़की)

(घ) ………………………… दूध से बनता है । (पनीर/नगीना)

2. इन शब्दों को ठीक से लिखिए ।

भजी = जीभ   रकीफ़ = …………   शररी = …………

अध्यापन संकेत : बच्चों को 'इ' और 'ई' की मात्रा के उच्चारण में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

उ की मात्रा (उ = ु) का ज्ञान

स + उ = स + ु = सु	ज + उ = ज + ु = जु	क + उ = क + ु = कु

ज + ु = जु, जुराब

ग + ु = गु, गुलाब

छ + ु = छु, कछुआ

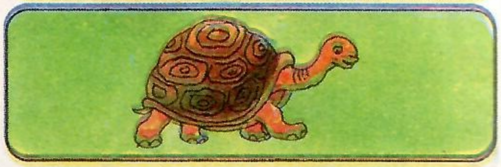

ब + ु = बु, साबुन

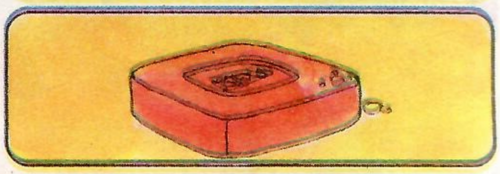

स + ु = सु, सुराही

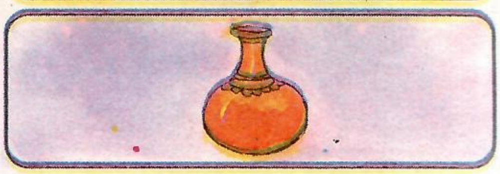

देखिए समझिए और पढ़िए :

सुख	दुख	सुन	धुन
चुप	मुख	चुन	मुन
दुकान	जुकाम	सुनार	सुधार
कुसुम	मुकुल	मुकुट	फुदक
गुड़िया	बुढ़िया	चुहिया	गुझिया

अध्यापन संकेत : 'उ' की मात्रा के विषय में बच्चों को बताएँ कि 'उ' की ध्वनि व्यंजन के बाद सुनाई देती है । इसकी मात्रा व्यंजन के नीचे लगाई जाती है ।

पाठ – सात

कुसुम बिटिया जाग । मुकुल आ गया । सुबह–सुबह उठ । गुलाबजामुन ला । मिलकर खा । सुराही का पानी पी । गुड़िया रख । मुरारी बुलबुल लाया । उसका गीत सुन । बुलबुल छिप गई । कुसुम बुआ की बात सुन । दातुन कर । साबुन लगाकर नहा । सुनहरा कुरता पहन ।

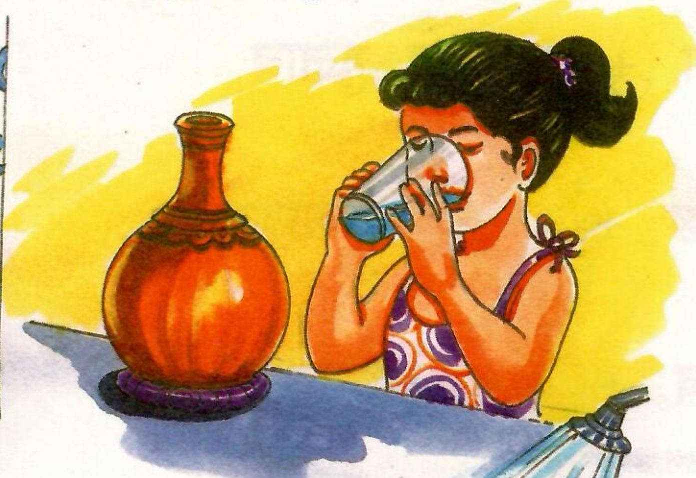

अभ्यास

1. खाली स्थान पर सही शब्द भरिए ।

(क) .... ने मीठा गाना गाया । (बुलबुल/ कौआ)

(ख) राजा के सिर पर .... था । (मुकुट/ हार)

(ग) साधु के पास .... थी । (बाल्टी/ लुटिया)

2. नीचे लिखे शब्द शुद्ध कीजिए ।

पूड़िया =   गूलाब = ...

फूटबाल =   जूराब = ...

ऊ की मात्रा (ऊ = ू) का ज्ञान

प + ऊ = प + ू = पू	क + ऊ = क + ू = कू	ध + ऊ = ध + ू = धू

स + ू = सू, सूरज

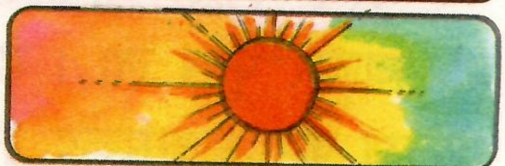

च + ू = चू, चूहा

ज + ू = जू, जूता

फ + ू = फू, फूल

म + ू = मू, मूली

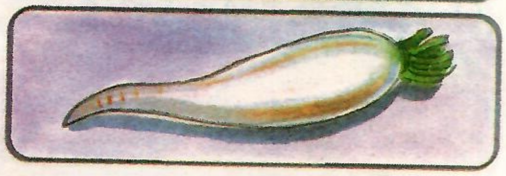

समझिए और पढ़िए :

चूहा	भूसा	पूजा	चूना
भालू	आलू	चाकू	डाकू
सूरज	पूरब	कसूर	कपूर
कचालू	लड़ाकू	तराजू	पालतू
मज़दूर	फूलदान	शहतूत	तरबूज़

अध्यापन संकेत : ध्यान रखो 'ऊ' की मात्रा (ू) व्यंजन के नीचे लगाई जाती है और इसके उच्चारण में अधिक ज़ोर देकर बोलना पड़ता है ।

पाठ - आठ

राजू सूरज निकल आया । चबूतरे पर झाड़ू लगा । पूजा का थाल सजा । बाग जाकर फूल ला । डमरू मत बजा । नाखून साफ़ रख । जूते पर पॉलिश कर । अमरूद रख । तराजू ला । धूल साफ़ कर । चाकू भी ला । कूड़ादान साफ़ कर । फूलदान सजा । कचालू भून । फिर झूला झूल ।

अभ्यास

1. खाली स्थान पर सही शब्द भरिए ।

(क) निकला .... हुआ सवेरा । (सूरज/ चाँद)

(ख) उड़ा .... छोड़ बसेरा । (घोड़ा/ कबूतर)

(ग) खिली सुनहरी प्यारी .... । (चाँदनी/ धूप)

2. ऊ (ू) की मात्रा लगाकर शब्द पूरे कीजिए ।

अमरद   तरबज़   फलदान   कबतर

अध्यापन संकेत : बच्चों को 'उ' (ु) तथा 'ऊ' (ू) की मात्रा के अंतर को अच्छी तरह से समझाएँ ।

27-Sep-0 12:24:46

ए की मात्रा (ए = े) का ज्ञान

क + ए = क + े = के	स + ए = स + े = से	र + ए = र + े = रे

स + े = से, सेब

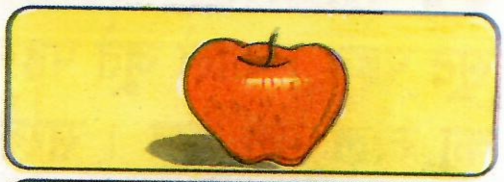

प + े = पे, पेड़

क + े = के, केला

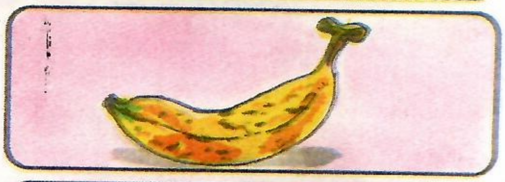

र + े = रे, करेला

व + े = वे, सवेरा

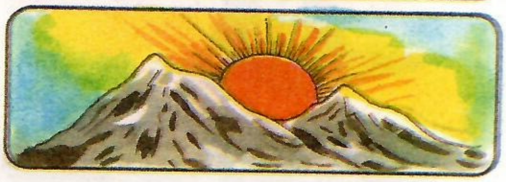

समझिए और पढ़िए :

रेल	मेल	तेज	मेज
सेब	बेल	पेट	लेट
केला	मेला	देखा	रेखा
घेरा	मेरा	मेवा	सेवा
रमेश	नरेश	रेशम	बेसन

अध्यापन संकेत : बच्चों को बताएँ कि 'ए' की मात्रा े सदैव व्यंजन के ऊपर ही लगाई जाती है ।

पाठ – नौ

हेमा मेले चल । देर मत कर । रेल से चल । महेश तू भी चल । सफ़ेद सूट पहन । काले जूते पहन । हेमा बेर ले ले । महेश केले खरीद ले । जादू का खेल मत देख । सरकस देख । महेश अब घर चल ।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए शब्दों पर ए (े) की मात्रा लगाइए ।

पड़ शर हथली सफद मलरिया

2. नीचे लिखे शब्दों से खाली जगह भरिए ।

देश शेर सपेरा सेवा

(क) जंगल में .... रहता है ।

(ख) मेले में एक .... था ।

(ग) हमारे .... का नाम भारत है ।

(घ) मुकेश माता–पिता की .... करता है ।

‘ऐ’ की मात्रा, (ऐ = ै) का ज्ञान

म + ऐ = म + ै = मै	प + ऐ = प + ै = पै	श + ऐ = श + ै = शै

ब + ै = बै, बैल

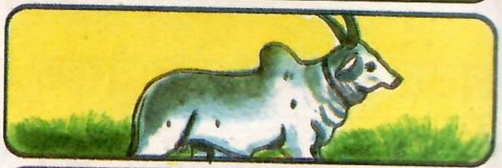

प + ै = पै, पैर

थ + ै = थै, थैला

क + ै = कै, कैमरा

स + ै = सै, सैनिक

पढ़िए और बोलिए :

रैन	चैन	सैर	तैर
बैल	मैल	गैस	तैश
मैदा	पैसा	मैना	भैया
जैसा	वैसा	हैरान	शैतान
पैदल	हैदर	वैभव	बैठक
तैयार	तैराक	कैलाश	मैदान

अध्यापन संकेत : बच्चों को ‘ऐ’ की मात्रा (ै) के प्रयोग को समझाएँ तथा उनसे मात्रा का सही उच्चारण कराएँ ।

पाठ – दस

कैलाश एक किसान है । उसके पास गैया है । एक बैल भी है । वह बैलगाड़ी खींचता है । कैलाश का एक मित्र है । उसका नाम हैदर है । वह लठैत है । वह तेज़ तैराक भी है । उसने एक डकैत मार डाला । वह किसी से बैर नहीं रखता । चैन से काम करता है । उसकी एक बैठक है । वह सबका सही फैसला करता है ।

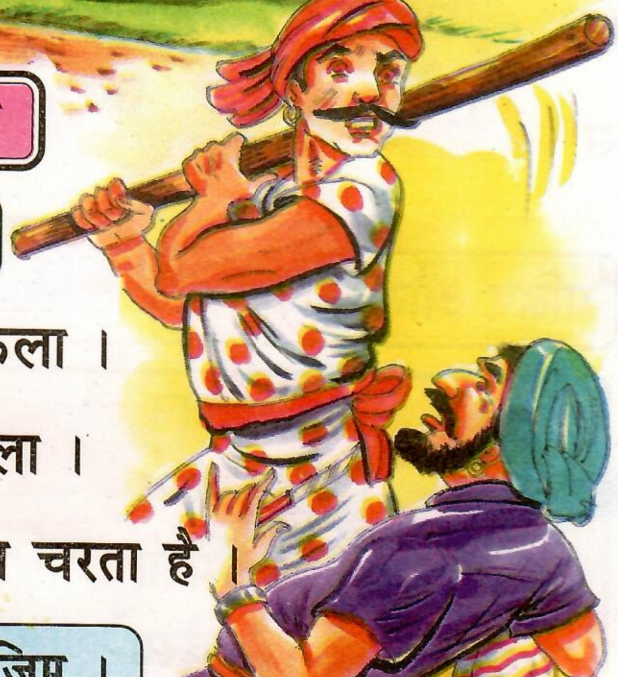

अभ्यास

1. चित्र देखकर वाक्य पूरे करिए ।

.... निकला ।

.... खिला ।

.... घास चरता है ।

2. नीचे दिए गए शब्दों को शुद्ध कीजिए ।

लाथै	थैला	कैडत	....
दामैन	....	राकतै	....

ओ की मात्रा (ओ = ो) का ज्ञान

क + ओ = क + ो = को	फ + ओ = फ + ो = फो	ज + ओ = ज + ो = जो

त + ो = तो, तोता

क + ो = को, कोट

ढ + ो = ढो, ढोलक

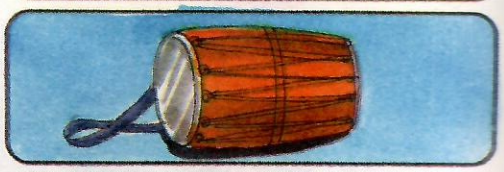

ग + ो = गो, खरगोश

फ़ + ो = फ़ो, टेलीफ़ोन

पढ़िए और बोलिए :

मोर	शोर	चोर	डोर
सोना	कोना	छोटा	मोटा
कोयल	बोतल	कोमल	होटल
मोहन	सोहन	भोजन	रोगन
ओखली	टोकरी	खोपड़ी	लोमड़ी
समोसा	यशोदा	सोमवार	अखरोट

अध्यापन संकेत : बच्चों को 'ओ' (ो) की मात्रा वाले शब्दों का उचित अभ्यास करवाएँ ।

पाठ – ग्यारह

कोमल बोली, "अमोली देखो कोयल काली होती है । तोता हरा होता है । घोड़ा तेज़ दौड़ता है । खरगोश हरी-हरी घास खाता है । यशोदा धोबिन है । वह कपड़े धोती है । मोती उसका पति है । वह मोटा है । उसकी बोली मीठी है । गोपी उसका बेटा है । मोती कहता है – बेटा कभी झूठ मत बोलो । चोरी मत करो ।"

अभ्यास

1. ओ की मात्रा (ो) लगाकर शब्दों को पूरा करें ।

म....र, खरग....श, स....मवार, रस....ई ।

2. खाली स्थान पर ठीक शब्द भरिए ।

(क) .... मीठा गाती है । (कोयल/ तितली)

(ख) .... सब्ज़ी का नाम है । (केला/ गोभी)

(ग) .... हमारा राष्ट्रीय पक्षी है । (तोता/ मोर)

औ की मात्रा (औ = ौ) का ज्ञान

म + औ = म + ौ = मौ	च + औ = च + ौ = चौ	स + औ = स + ौ = सौ

प + ौ = पौ, पौधा

च + ौ = चौ, चौकी

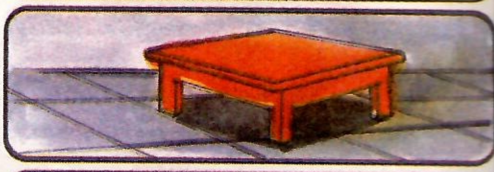

ल + ौ = लौ, लौकी

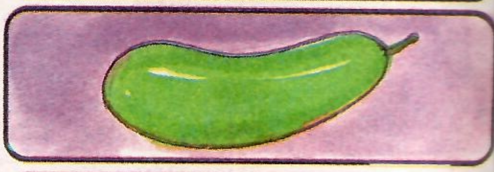

थ + ौ = थौ, हथौड़ी

त + ौ = तौ, तौलिया

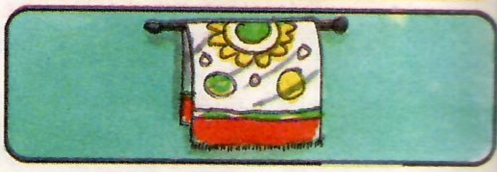

पढ़िए और बोलिए :

सौदा	पौधा	चौड़ा	दौड़ा
कौआ	नौका	गौरी	मौसी
नौकर	मौसम	सौरभ	गौरव
चौखट	दौलत	कचौड़ी	पकौड़ी
खिलौना	बिछौना	तौलिया	चौपाया
चौकीदार	नौजवान	चौधरी	चौबीस

अध्यापन संकेत : बच्चों को 'ओ' (ो) तथा 'औ' (ौ) की मात्रा के अंतर के बारे में स्पष्ट रूप से समझाएँ ।

पाठ – बारह

कौशल आओ । पौधा लगाएँ । नौका मत चलाओ । देखो कौआ काला है । कौआ छत पर बोलता है । अरे, वाह ! मौसी जी आ गईं । उनके साथ नौकर भी है । सौरभ फौरन बाज़ार जा । सौ का नोट ले जा । गरम पकौड़े ला । मौसमी का रस ला । गौरी लौकी की खीर बना । मौसी को तौलिया दो । चौकी पर बिछौना रख ।

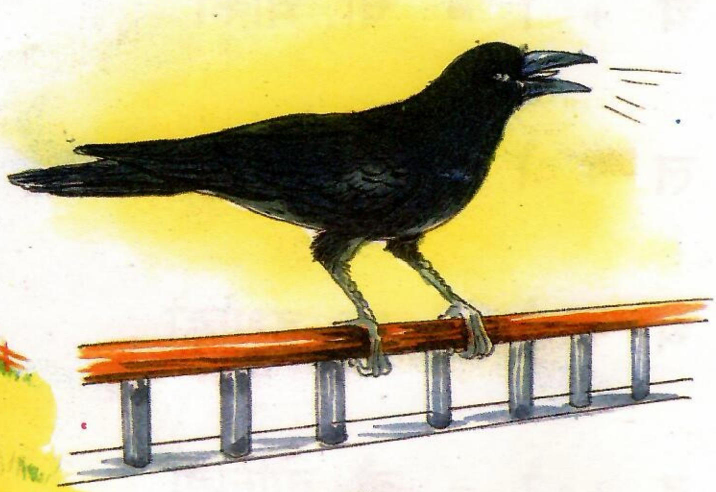

अभ्यास

1. औ की मात्रा (ौ) लगाकर शब्द पूरे करें ।

म ··· सी, बिछ ··· ना, च ··· कीदार, म ··· सम

2. खाली जगह पर ठीक शब्द भरिए ।

(क) बच्चे .... से खेलते हैं । (खिलौने/ बिछौने)

(ख) मोहन ने .... लगाया । (चौका/ पौधा)

(ग) .... सुहावना है । (मौसम/ महीना)

अं की मात्रा (अं = ं) का ज्ञान

क + अं = क + ं = कं	श + अं = श + ं = शं	ग + अं = ग + ं = गं

प + ं = पं, पंख

श + ं = शं, शंख

अ + ं = अं, अंडा

त + ं = तं, पतंग

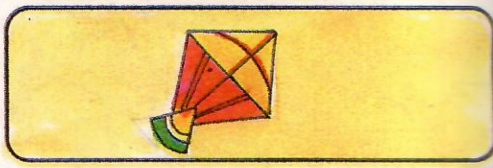

ब + ं = बं, बंदूक

पढ़िए और बोलिए :

रंग	भंग	दंग	जंग
शंख	पंख	वंश	अंश
झंडा	अंडा	डंडा	ठंडा
गंगा	कंघा	गंजा	फंदा
बंगला	संतरा	संसार	झंकार
मंदिर	अंजीर	लंगूर	अंगूर

अध्यापन संकेत : बच्चों को 'अं' (ं) की मात्रा के उच्चारण में नासिका की ध्वनि को स्पष्ट करके बताएँ ।

पाठ – तेरह

मंगलवार का दिन है । कंचन आओ । मंदिर चलें । हनुमान जी की पूजा करें । घंटी बजाओ । पंडित जी ने शंख बजाया । बसंत का मौसम है । तितली रंग–बिरंगी है । बगिया में सुगंध फैली है । चंपा के फूल खिले हैं । अब चलो पतंग उड़ाएँ । आनंद मनाएँ ।

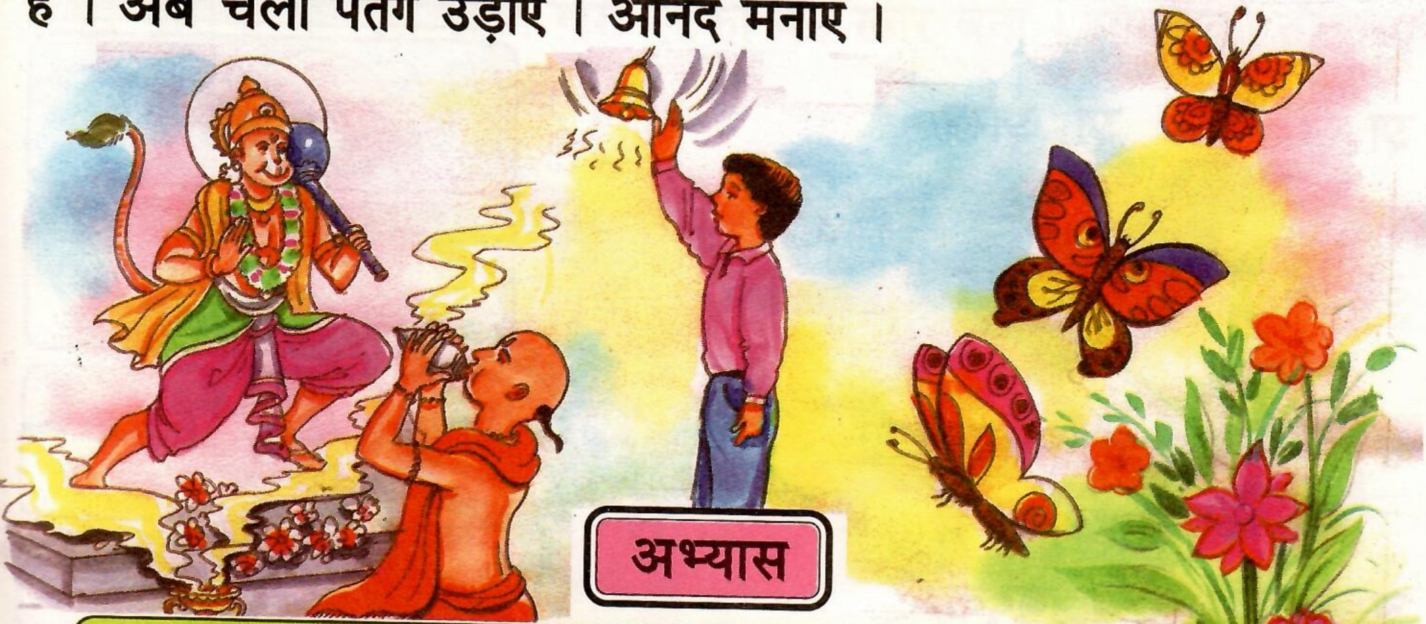

अभ्यास

1. ‘अं’ (ं) की मात्रा लगाइए और शब्द पूरे करें ।

मगल जगल गगा पखा

2. नीचे दिए गए चित्रों के नीचे नाम लिखो ।

....

....

....

2. नीचे दिए गए शब्दों को ठीक करके लिखिए ।

गूरलं .... रबंद .... लगजं ....

अः की मात्रा, अः (ः) का ज्ञान

क + अः = क + ः = कः	न + अः = न + ः = नः	त + अः = त + ः = तः

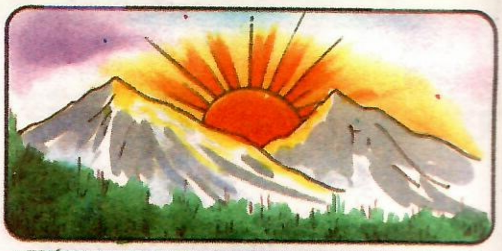

त + ः = तः, प्रातःकाल

म + ः = मः, नमः

छ + ः = छः, छः

पढ़िए और बोलिए :

अतः	पुनः	प्रातः
दुःख	शनैः	जनः
फलतः	स्वतः	क्रमशः

पढ़िए और बोलिए :

(क) हम प्रातःकाल उठते हैं ।

(ख) कभी किसी को दुःख मत दो ।

(ग) गौरव छः बजे जाएगा ।

चंद्रबिंदु, अँ की मात्रा, (अँ = ँ) का ज्ञान

ऊ + अँ = ऊ + ँ = ऊँ	धू + अँ = धू + ँ = धूँ

चा + ँ = चाँ, चाँद

बा + ँ = बाँ, बाँसुरी

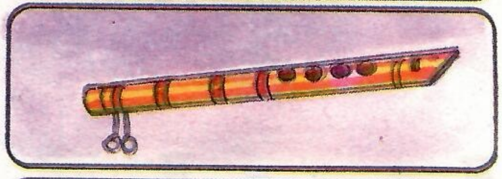

आ + ँ = आँ, आँख

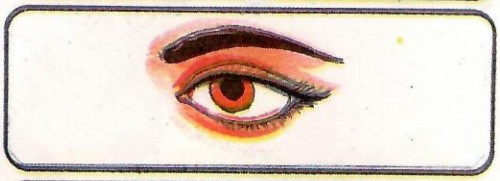

अ + ँ = अँ, अँगूठी

पा + ँ = पाँ, पाँव

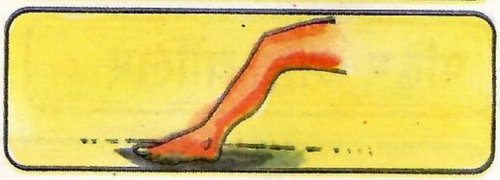

पढ़िए और समझिए :

घूँट	ऊँट	पूँछ	मूँछ
साँप	दाँत	गाँव	चाँद
काँटा	चाँटा	खाँसी	फाँसी
बाँसुरी	लँगड़ा	अँगूठी	आँगन
खिड़कियाँ	लड़कियाँ	बकरियाँ	चूड़ियाँ

पाठ – चौदह

चाँदराम लँगड़ा है । उसके गाँव का नाम चाँदपुर है । वह ऊँट की सवारी करता है । ऊँट की टाँगें लंबी होती हैं । उसकी पूँछ छोटी होती है । उसके दाँत तेज़ होते हैं । कल आँधी आई थी । ताँगा पलट गया । ताँगेवाले को सबने डाँटा ।

अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करें व खाली स्थान भरिए ।

(छः, दाँत, चाँद)

(क) हमें हर रोज़ .... साफ़ करने चाहिएँ ।

(ख) आसमान में रात को .... निकलता है ।

(ग) हम .... बजे बाज़ार जाएँगें ।

2. चित्र देखकर उनके नीचे शब्द लिखिए ।

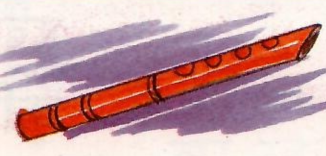

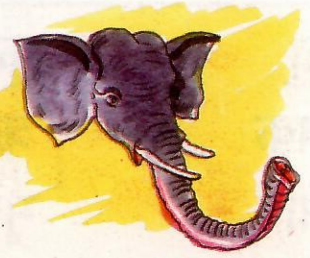

....

अध्यापन संकेत : बच्चों को अं (ं) और चंद्रबिंदु (ँ) में बोल-बोल कर अंतर स्पष्ट करें और सही ढंग से समझाएँ ।

ऋ की मात्रा, (ऋ = ृ) का ज्ञान

म + ऋ = म + ृ = मृ	क + ऋ = क + ृ = कृ

व + ृ = वृ, वृक्ष

ग + ृ = गृ, गृह

न + ृ = नृ, नृप

द + ृ = दृ, दृग

त + ृ = तृ, तृण

पढ़िए और समझिए :

ऋतु	कृपा	घृणा	तृष्णा
कृषक	ऋषिकेश	हृदय	कृपाण
वृथा	मृदा	कृषि	ऋषि
मृग	वृक्ष	दृग	मृत

पाठ – पंद्रह

एक कृषक था । उसके पास मृग था । मृग तृण चरता था । वह वृक्ष के नीचे बैठ जाता । ऋषभ कृषक का छोटा पुत्र था । उसका हृदय कोमल था । अपना सारा गृह–कार्य करता था । किसी से घृणा नहीं करता था । एक दिन उसे एक वृद्ध मिला । ऋषभ ने उसे जल पिलाया । वृद्ध ने ऋषभ को आशीर्वाद दिया ।

अभ्यास

1. ऋ की मात्रा (ृ) लगाकर शब्द सही कीजिए ।

कपाण   मग   वक्ष   कषक

2. खाली जगह पर सही शब्द भरिए ।

(तृण, नृप, मृग, कृपाण)

(क) एक बार एक .... जंगल में गया ।

(ख) उसने वहाँ एक .... देखा ।

(ग) मृग .... चर रहा था ।

(घ) राजा के पास धनुष व .... थी ।

र – रेफ = (ʿ) की मात्रा का ज्ञान

स + ʿ + प = सर्प

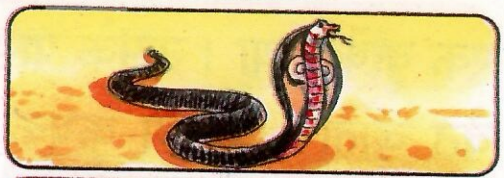

फ + ʿ + श = फ़र्श

प + ʿ + स = पर्स

क + ʿ + ण = कर्ण

पढ़िए और समझिए :

कर्म	धर्म	सर्प	चर्म
फर्म	गर्म	नर्स	पर्स
हर्षा	वर्षा	सर्दी	गर्मी

पाठ – सोलह

निर्मल अपने मित्रों के साथ पार्क में खेलता था । एक बार सर्दी की शाम थी । ज़ोर से वर्षा होने लगी । निर्मल के सब कपड़े भीग गए । उसके पिताजी टार्च लेकर उसे लेने आए । वह हर्षपूर्वक अपने घर पहुँचा । पिताजी ने उसे समझाया – "पुत्र ! पहले आवश्यक कार्य पूर्ण करने चाहिएँ ।"

र – पदेन की मात्रा (्र , ्र) का ज्ञान

क + ्र = क्र	ट + ्र = ट्र

ट + ्र = ट्र, ट्रक

त + ्र = त्र, छात्र

फ + ्र = फ्र, फ्रॉक

पढ़िए और समझिए :

क्रम	भ्रम	श्रम	ड्रम
चक्र	वक्र	अग्र	भद्र
प्रणाम	प्रयास	प्रताप	प्रयाग
आम्र	ताम्र	क्रोध	प्राण

पाठ – सत्तरह

आज शुक्रवार है। द्रौपदी प्रत्येक कार्य क्रम से करो। बड़ों को प्रणाम करो। कभी क्रोध मत करो। तुम प्रथम कक्षा की छात्रा हो। वर्दी की फ्रॉक गंदी मत करो। खूब प्रयास करो। नम्रता बहुत बड़ा गुण है। प्रेम ही जीवन है।

आधे अक्षर का प्रयोग

म + क + खी = मक्खी	च + क + की = चक्की

म + क + का = मक्का

ब + च् + चा = बच्चा

डा + क + ट + र = डाक्टर

पढ़िए और समझिए :

भव्य	नव्य	मध्य	सभ्य
कच्चा	बच्चा	सच्चा	अच्छा
गुड्डू	लड्डू	बिच्छू	कद्दू
दिल्ली	बिल्ली	छुट्टी	मिट्टी
पत्ता	छत्ता	प्याज	त्याग
लठ्ठा	मठ्ठा	कट्टा	गत्ता
महात्मा	फव्वारा	गुब्बारा	सन्मति
ब्राह्मण	अक्सर	दफ़्तर	वात्सल्य

लालची कुत्ता

एक कुत्ता बहुत भूखा था । वह अपनी भूख मिटाने के लिए भोजन की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था । अंत में वह एक कसाई की दुकान पर जा पहुँचा । वहाँ उसे एक माँस का टुकड़ा मिल गया । वह उसे अपने मुँह में दबाकर नदी की ओर एकांत में चल दिया । नदी पार करते समय उसे अपनी परछाईं पानी में दिखाई दी । परछाईं को उसने दूसरा

कुत्ता समझा । वह उसका टुकड़ा लेना चाहता था । वह भौंकने लगा । भौंकते ही उसका टुकड़ा मुँह से निकलकर पानी में गिर पड़ा । कुत्ता भूखा रह गया और निराश होकर पछताने लगा ।

सारांश

शिक्षा

लालच बुरी बला है ।

सोचिए और बताइए :

प्र०1 कुत्ता इधर–उधर क्यों भटक रहा था ?

प्र०2 उसे माँस का टुकड़ा कहाँ मिला ?

प्र०3 उसने नदी पार करते समय पानी में क्या देखा ?

प्र०4 कुत्ता क्यों भौंका और रोटी के टुकड़े का क्या हुआ ?

प्र०5 इस कहानी से क्या सीख मिलती है ?

कौआ और लोमड़ी

एक कौआ था । उसे एक रोटी का टुकड़ा कहीं पड़ा हुआ मिल गया । वह उसे लेकर जंगल में चला गया । वहाँ नदी किनारे जाकर एक पेड़ पर बैठ गया । तभी उधर घूमती हुई एक लोमड़ी आ पहुँची । लोमड़ी भूखी थी ।

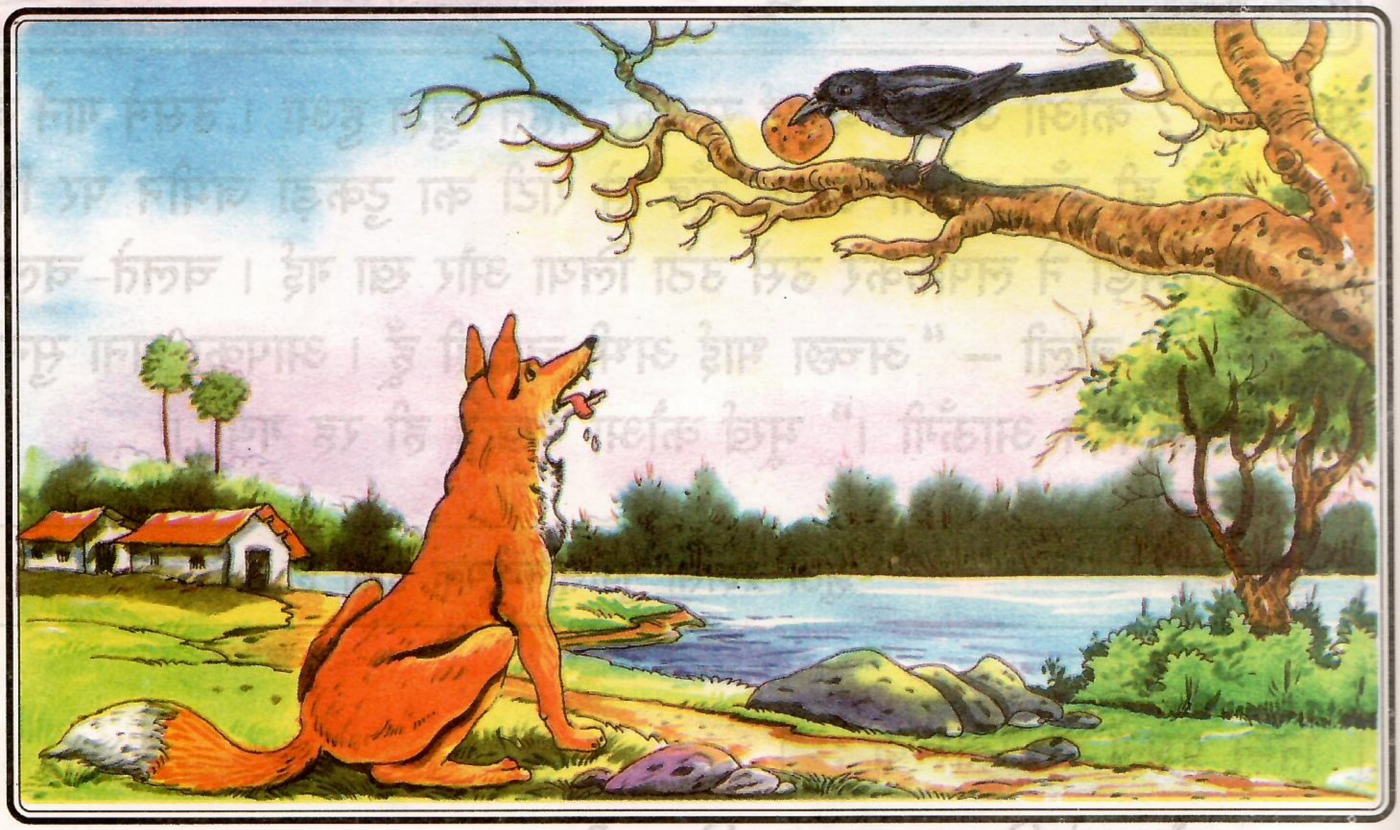

लोमड़ी ने कौए को पेड़ पर बैठे देखा । उसके मुँह में रोटी का टुकड़ा देखकर लोमड़ी ललचा उठी । वह मन ही मन रोटी का टुकड़ा लेने की तरकीब सोचने लगी । लोमड़ी चालाकी से बोली । अरे कौए राजा ! तुम तो आज बहुत सुंदर लग रहे हो । सुना है तुम्हारी बोली भी बहुत मीठी है । तुम बहुत अच्छा गाना गाते हो । क्या आज तुम मुझे भी गाना

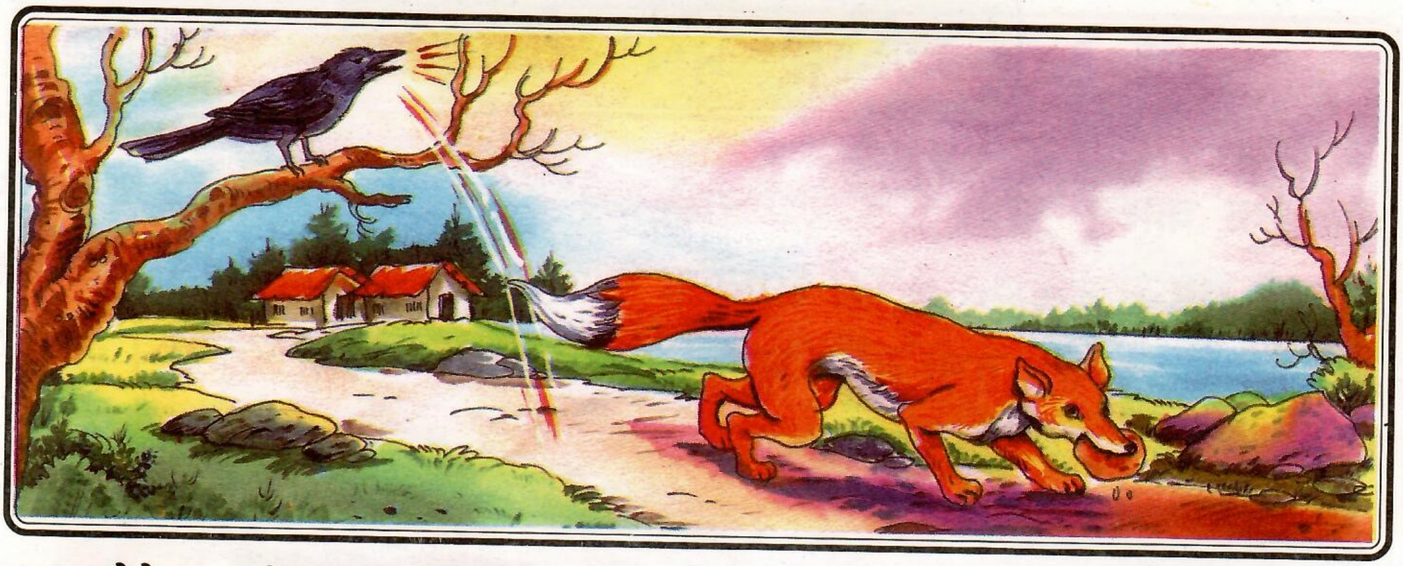

सुनाओगे ? कौआ अपनी बड़ाई सुनकर बहुत खुश हुआ । उसने गाने के लिए जैसे ही मुँह खोला उसके मुँह से रोटी का टुकड़ा जमीन पर गिर पड़ा । लोमड़ी ने लपककर उसे उठा लिया और खा गई । चलते-चलते वह कौए से बोली – "अच्छा भाई अभी चलती हूँ । आपका गाना सुनने फिर किसी दिन आऊँगी ।" मूर्ख कौआ देखता ही रह गया ।

शिक्षा

झूठी प्रशंसा नुकसानदायक होती है ।

निम्न प्रश्नों के उत्तर दो :-

प्र०1 कौए को किसका टुकड़ा मिला ?

प्र०2 वह उस टुकड़े को लेकर कहाँ गया ?

प्र०3 लोमड़ी के मन में लालच क्यों आया ?

प्र०4 लोमड़ी ने कौए से टुकड़ा किस प्रकार लिया ?

प्र०5 लोमड़ी कौए से क्या कहकर चली गई ?

प्र०6 हमें इस कहानी से क्या सीख मिलती है ?

अभ्यास-कार्य

गाय

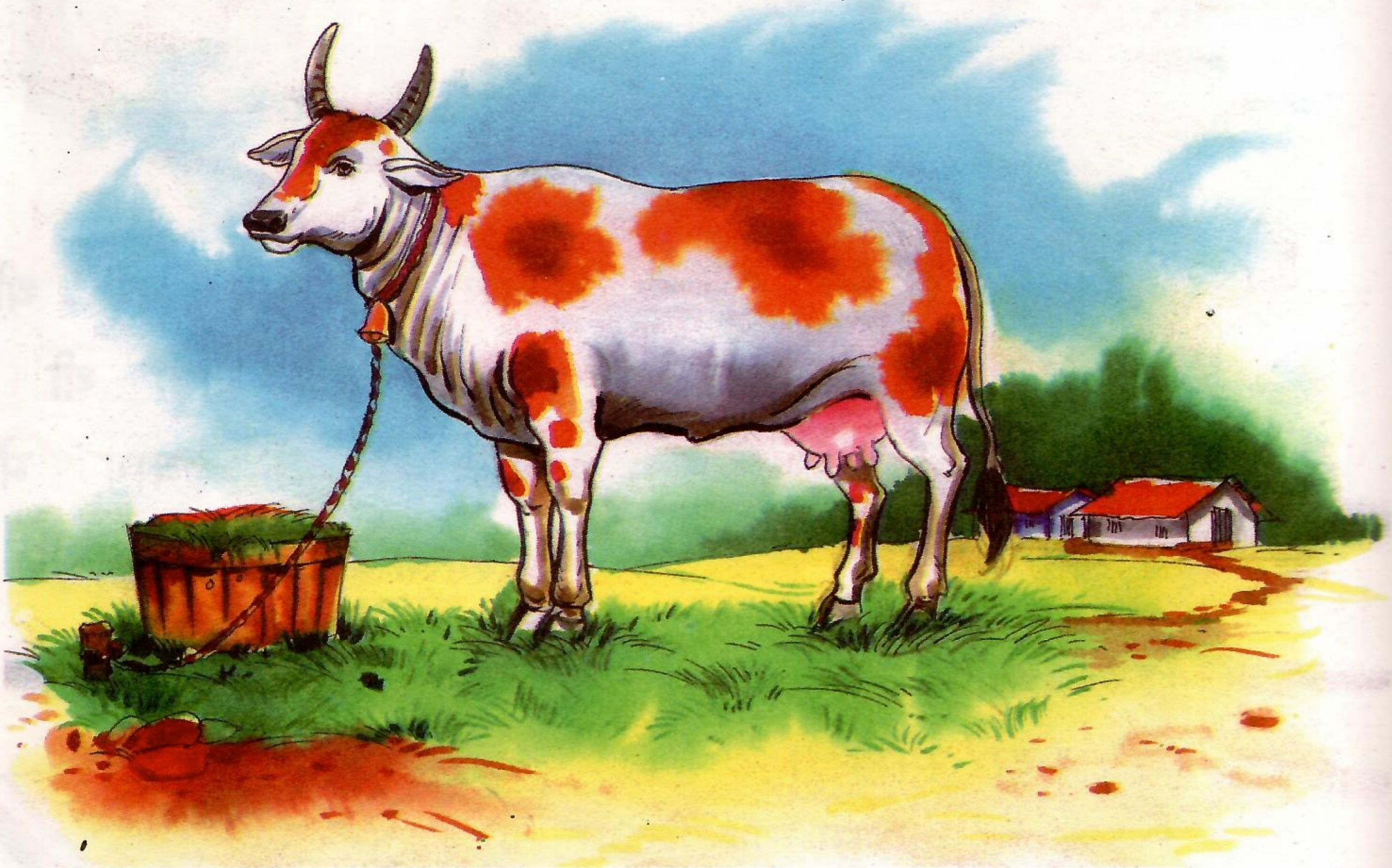

गाय एक पालतू .... है । यह हमें .... देती है । गाय के चार .... व .... पैर होते हैं । इसकी एक लंबी ..... होती है । गाय .... व चारा खाती है । इसके .... सींग होते हैं । गाय कई .... की .... है । गाय के बछड़े बड़े होकर .... कहलाते हैं । गाय का .... बहुत मीठा होता है । गाय बहुत .... होती है । हम गाय को गौ .... कहते हैं ।

पहेलियाँ

कटोरे पे कटोरा,
बेटा बाप से भी गोरा ।

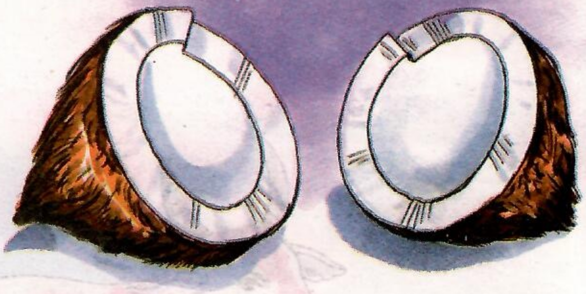

हरी थी मन भरी थी,
लाल मोती जड़ी थी ।
राजाजी के बाग में,
दुशाला ओढ़े खड़ी थी ।

उजली धरती काला बीज,
देती हमको सुंदर सीख ।

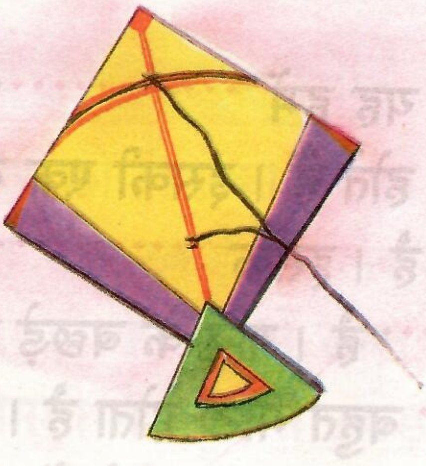

पंछी एक देखा अलबेला,
पंख बिना उड़ रहा अकेला ।
बाँध गले में लम्बी डोर,
नाप रहा अंबर का छोर ।

सूरज

जागो मोहन जागो मोहन,
देखो प्यारे हुआ सवेरा ।

चिड़िया चीं-चीं गीत सुनाती,
गाती फिरती छोड़ बसेरा ।

मुर्गा कुकड़ूँ कूँ बांग लगाता,
दूर हुआ घोर अँधेरा ।

विनती करते हे भगवान,
कितना सुंदर है जग तेरा ।

चतुर खरगोश

एक जंगल था । उस जंगल में अनेक तरह के जानवर रहते थे । उनमें से एक शेर था । शेर अन्य जानवरों को मार–मारकर खा जाता । इसलिये उससे जंगल के सभी जानवर परेशान थे । सब उसके भय के कारण डरते और काँपते थे ।

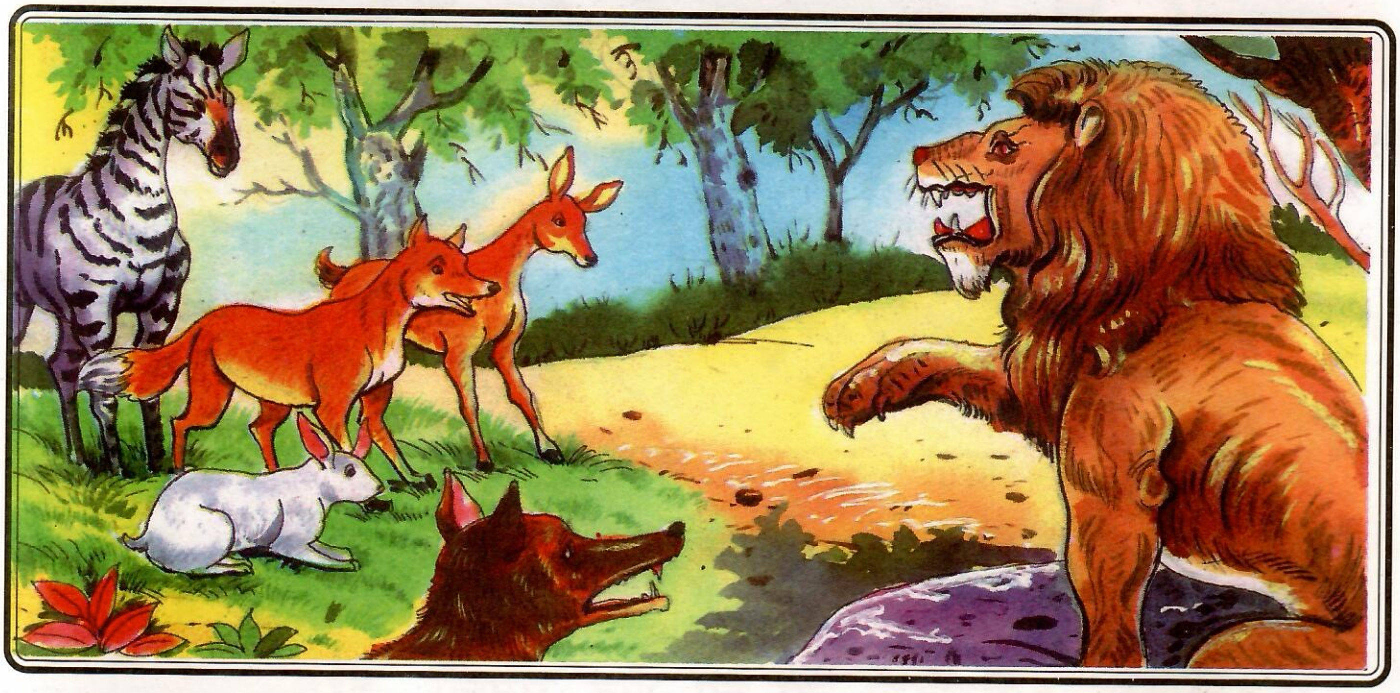

एक दिन जंगल के सभी जानवर इकट्ठे हुए । उन सब ने मिलकर शेर के पास जाने का फैसला किया । शेर के पास पहुँचकर उन्होंने विनती करते हुए कहा – "महाराज आप बेवजह परेशान होते हैं । आप तो जंगल के राजा हैं । हममें से बारी–बारी कोई न कोई आपके पास आ जाएगा । आप उसे खाकर अपनी भूख मिटा लिया करें । आपको जंगल में घूमने की कोई जरुरत नहीं ।" शेर ने सोचा बात सही है मुझे बिना मेहनत के ही भोजन मिल जायेगा और उसने उनसे कहा, ठीक है । हमने तुम्हारी

बात मान ली । उस दिन से शेर के पास एक जानवर जाता शेर उसे मारकर खा जाता ।

एक दिन एक बूढ़े खरगोश की बारी आई । वह बहुत चालाक था । वह सोचने लगा आज शेर को मारने का कोई तरीका निकाला जाए । मेरी तो जान वैसे भी संकट में है । रास्ते में वह धीरे-धीरे चलता हुआ शेर के पास देर से पहुँचा । शेर भूख के कारण छटपटा रहा था ।

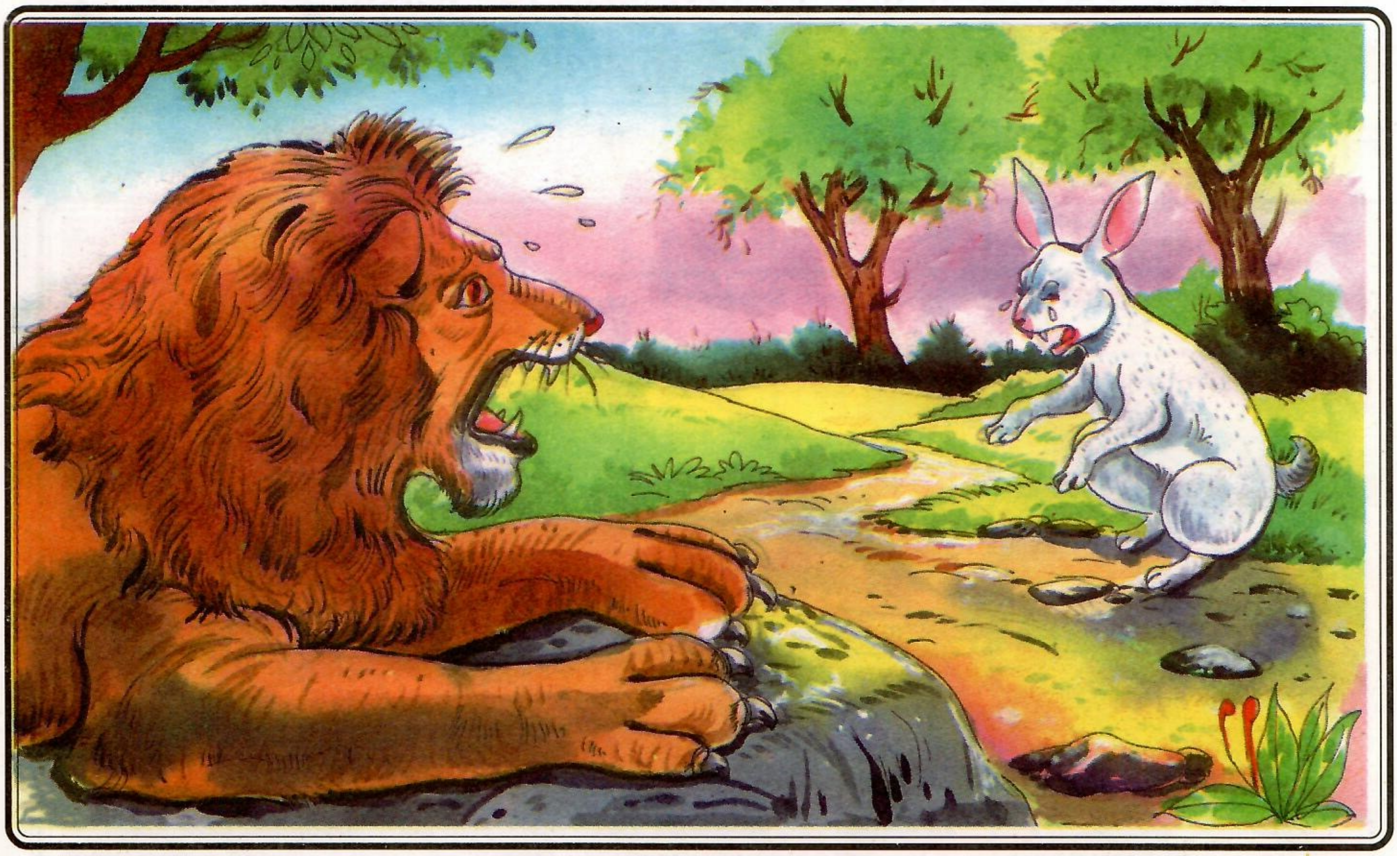

शेर ने खरगोश से देर से आने का कारण पूछा । खरगोश बोला – "महाराज ! इसमें मेरी कोई गलती नहीं है । मैं तो सही समय पर ही आ जाता लेकिन रास्ते में मुझे एक कुएँ वाले शेर ने रोक लिया । वह अपने आपको जंगल का राजा बता रहा था, और मुझे खाना चाहता था । मैं उससे बड़ी मुश्किल से जान बचाकर आपके पास पहुँचा हूँ ।" यह

सुनकर शेर ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगा । उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया । वह बोला, "अच्छा ! चलो मैं पहले उस शेर को ही देखूँ ।"

चतुर खरगोश शेर को कुएँ के पास ले गया और बोला, "महाराज ! वह देखिए शेर कुएँ में आराम से बैठा है ।" शेर ने कुएँ में झाँककर देखा । अपनी परछाईं को दूसरा शेर समझकर वह जोर-जोर से दहाड़ने लगा । कुएँ में उसकी आवाज़ गूँजने लगी । वह समझा कुएँ में सचमुच कोई दूसरा शेर है । उसने उसे मारने के लिए कुएँ में छलाँग लगाई वह पानी में डूबकर मर गया ।

चतुर खरगोश की चालाकी का समाचार सुनकर जंगल के सभी जानवर बहुत प्रसन्न हुए । सबने मिलकर खरगोश का बार-बार धन्यवाद किया ।

बारहखड़ी

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
–	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ	ं	ः

क	का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खृ	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गृ	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घृ	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू	ङृ	ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चृ	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छृ	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जृ	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झृ	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ञ	ञा	ञि	ञी	ञु	ञू	ञृ	ञे	ञै	ञो	ञौ	ञं	ञः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टृ	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठृ	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डृ	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढृ	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
ण	णा	णि	णी	णु	णू	णृ	णे	णै	णो	णौ	णं	णः
त	ता	ति	ती	तु	तू	तृ	ते	तै	तो	तौ	तं	तः

थ	था	थि	थी	थु	थू	थृ	थे	थै	थो	थौ	थं	थः
द	दा	दि	दी	दु	दू	दृ	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धृ	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	नृ	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पृ	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फृ	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बृ	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भृ	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मृ	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	यृ	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू	रृ	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	लृ	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शृ	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षृ	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	सृ	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हृ	हे	है	हो	हौ	हं	हः
क्ष	क्षा	क्षि	क्षी	क्षु	क्षू	क्षृ	क्षे	क्षै	क्षो	क्षौ	क्षं	क्षः
त्र	त्रा	त्रि	त्री	त्रु	त्रू	त्रृ	त्रे	त्रै	त्रो	त्रौ	त्रं	त्रः
ज्ञ	ज्ञा	ज्ञि	ज्ञी	ज्ञु	ज्ञू	ज्ञृ	ज्ञे	ज्ञै	ज्ञो	ज्ञौ	ज्ञं	ज्ञः

राष्ट्रगान

जन–गण–मन अधिनायक जय हे,
भारत – भाग्य विधाता ।
पंजाब, सिंध, गुजरात मराठा,
द्राविड़ उत्कल बंग ।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि–तरंग ।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय गाथा ।
जन–गण–मंगल दायक जय हे,
भारत – भाग्य विधाता ।
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय, जय हे !

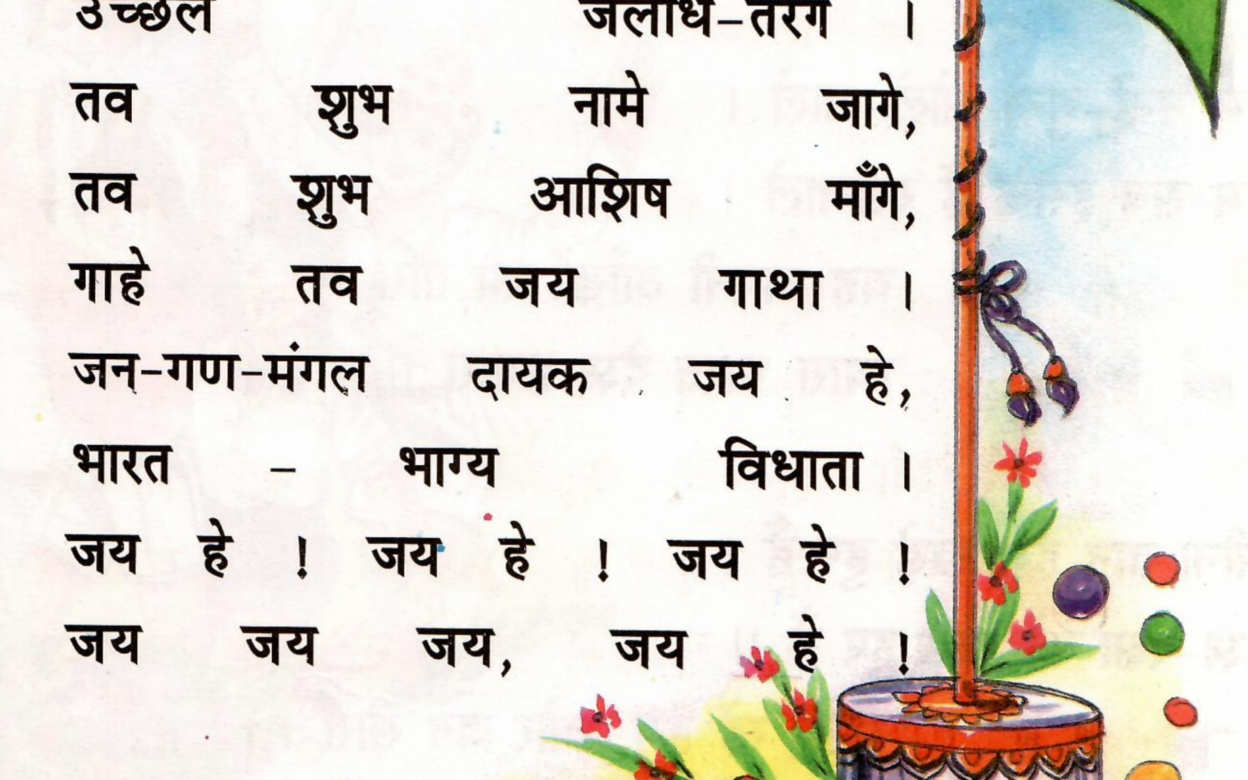

प्यारा भारत देश हमारा

प्यारा भारत देश हमारा, हमको है प्राणों से प्यारा ।।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई ।
आपस में सब भाई-भाई ।।
सबका है एक ही नारा ।
प्यारा भारत देश हमारा ।।

हम नन्हें-मुन्ने भोले-भाले ।
हम सब इसके हैं रखवाले ।
यह अपनी आँखों का तारा ।
प्यारा भारत देश हमारा ।।

सीना तान हम खड़े हुए हैं ।
देश-रक्षा को अड़े हुए हैं ।।
सुखी रहें हम, और जग सारा ।
प्यारा भारत देश हमारा ।।

शिक्षण संकेत : इस कविता को शिक्षक गण बच्चों को गाकर सुनाएँ और उन्हें कंठस्थ करके सुनाने के लिए प्रेरित करें । इस कविता के माध्यम से हमें देशभक्ति की प्रेरणा और अपने देश के बारे में भावबोध होता है ।

पुस्तकमाला के विषय में

किसी भी भाषा को सीखने के लिए चार कौशलों की आवश्यकता होती है। ये कौशल हैं - सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना। इस पुस्तकमाला की सभी पुस्तकों में इन चारों कौशलों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तकमाला की मुख्य विशेषताएं हैं :

- सरल, सहज एवं सुबोध भाषा-शैली;
- मानव-मूल्यों पर आधारित विषयों का समावेश;
- नवीन एवं कठिन शब्दों के स्पष्ट एवं सरल अर्थ;
- पाठ पर आधारित व्याकरण-ज्ञान;
- सजीव एवं उत्कृष्ट चित्र;
- देवनागरी की नई लिपि एवं चिह्नों का समावेश;

एवरशाइन ESP पब्लिशर्ज़
WZ-348, नांगल राया, नई दिल्ली-110046
दूरभाष : 28111758, 28113958, फैक्स : 28112353
ई-मेल : evershinepub@mantraonline.com

PRINTERS :M/S KIRPA RAM ENGRAVER

ISBN 81-7816-027-7

Illustrated by: Ajay Rai

Rs. 54/-